डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम

जोगिन्दर पॉल एक कामयाब लेखक और खुशकिस्मत इंसान थे–सादिक

नई दिल्ली, 26 जुलाई 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत प्रतिष्ठित उर्दू कथाकार जोगिन्दर पॉल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उर्दू–हिंदी के प्रख्यात आलोचक एवं चित्रकार प्रो. सादिक के व्याख्यान का आयोजन किया गया। अपने व्याख्यान में प्रो. सादिक ने जोगिन्दर पॉल के साथ अपने लगभग पचास सालों के संबंधों का याद किया और विस्तार से उनकी शख्सियत के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि 23 साल की उम्र में उनसे उनकी पहली मुलाकात औरंगाबाद में हुई थी और औरंगाबाद से दिल्ली तक का सफर उन दोनों ने एक साथ तय किया था। वे एक खुशकिस्मत इंसान थे। हर दृष्टि से उन्होंने एक कामयाब जिंदगी जी थी। वे एक कॉलेज में प्रिंसिपल रहे और कुशलता पूर्वक वहाँ का प्रशासन सँभाला तथा लोकप्रिय भी हुए। सच्चाई, ईमानदारी और मिहनत को वे सफलता के लिए तीन जरूरी सूत्र मानते थे। महाराष्ट्र में रहते हुए उन्होंने मराठी, हिंदी और उर्दू जबानों के साहित्य और संस्कृति को करीब लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जोगिन्दर पॉल की कहानियों को याद करते हुए हुए उन्होंने कहा कि उनका पहला कहानी–संग्रह अफ्रीका के जन–जीवन पर केंद्रित था, लेकिन हिंदुस्तान में भी वह उतना ही लोकप्रिय हुआ। उनकी कुल इक्कीस किताबें हैं। वे कहानी कहने की कला में माहिर थे और उनकी तकरीर भी बहुत मौलिक और प्रभावी हुआ करती थी। उनकी कहानियों में चित्रित आधुनिकता नुमाइशी नहीं है। वे पात्रों और उनके जीवन के साथ गहराई में डूबकर अपनी रचनाओं का सृजन करते थे। कार्यक्रम में सुकृता पॉल कुमार, परवेज शहरयार, जानकी प्रसाद शर्मा आदि के साथ उर्दू, हिंदी, मैथिली एवं कश्मीरी के बहुत–से लेखक और शोधछात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने श्रोताओं की जिज्ञासाओं के समाधान भी किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

ह/–
डॉ. के. श्रीनिवासराव